मलेरिया और उसकी रोकथाम

Malaria aur uski roktham

मलेरिया को 'जूड़ी बुखार' भी कहा जाता है। यह रोग एक मच्छत के काटने से होता है। इस मच्छर को 'एनाफिलीज' कहते हैं। यह मादा होती है।

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि यह रोग मच्छरों द्वारा फैलता है। इसके पहले लोग यही समझते थे कि यह रोग गंदी हवा के कारण होता है।

जहां गंदगी और नमी रहती है या गंदा पानी भरा रहता है, वहां मलेरिया तेजी से फैलता है। 'एनाफिलीज' नामक मादा मच्छर जब किसी मलेरिया के रोगी को काटती है तथा उसका खूना चूसती है तो उस समय रोगी के अंद के मलेरिया कीटाणु उस मच्छर के शरीर में पहुंच जाते हैं। फिर जब वह मादा मच्छर किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटती है तब वह उस व्यक्ति के शरीर में मलेरिया के कीटाणु पहुंचा देती है। इस तरह से एक स्वस्थ व्यक्ति मलेरिया रोग का शिकार हो जाता है।

रोग के लक्षण

– रोगी को कंपकंपी के साथ ठंड लगती है और बहुत तेज बुखार आता है, फिर 102 या 103 डिग्री तक पहुंच जाता है।

– तीसरे-चौथे दिन पहले की तरह ठंड लगकर तेज बुखार आता है।

– रोगी बहुत ही कमजोर पड़ जाता है। शरीर में कमजोरी आ जाती है

-रोगी का शरीर टूटता है।

-रोगी अंगड़ाइयां लेने लगता है।

रोग की रोकथाम

आगे बताए हुए उपायों के द्वारा मलेरिया के रोग से छुटकारा पाया जा सकता है

– अपने घर में पानी को खुला न छोड़ें, हरसंभव कोशिश यही होनी चाहिए कि मच्छर पैदा न हों।

– मादा 'एनाफिलीज' पानी में अंडे देती है। अत: इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपके घर के आस-पास पानी एकत्र न हो।

– यदि घर के आस-पास पानी भरा हुआ है तो उस स्थान पर मिट्टी का तेल छिडक़ देना चाहिए।

– नदियों, तालाबों, पोखरों, कुओं तथा गड्ढों में मछलियों को छोड़ देना चाहिए। वे मछलियां मच्छरों के लार्वा और अंडों का भक्षण कर उन्हें बढऩे नहीं देंगी।

– सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करना चाहिए।

– घर से मच्छरों को दूर भगाने के लिए मच्छरनाशक दवाओं और अगरबत्तियों का प्रयोग करना चाहिए।

– रात के ठंडे वातावरण में खुले स्थान पर नहीं सोना चाहिए।

– दरवाजे और खिड़कियां जालीदार होनी चाहिए।

– रोगी का कक्ष स्वच्छ हवादार और रोशनी-युक्त होना चाहिए।

-रोगी को तुरंत डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

– जब बुखार अधिक तेज हो तो माथे पर बर्फ की पट्टी रख देनी चाहिए।